Mantra Siddhi Rahasya

मन्त्र-सिद्धि-रहस्य

Sumit Girdharwal
9410030994, 9540674788
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.yogeshwaranand.org
www.baglamukhi.info
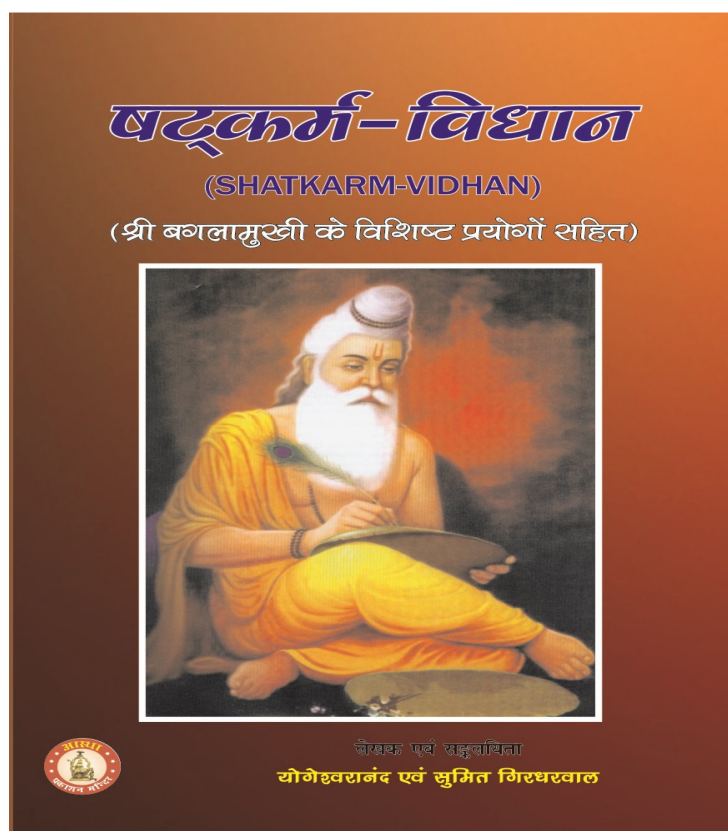
"मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे दैवज्ञे भैषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धि-र्भवति तादृशी॥"

अर्थात् मन्त्र, तीर्थ, द्विज, देवता, ज्योतिषी, औषध और गुरु में जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि प्राप्त होती है।

जो व्यक्ति साधना करना चाहता है, उसके लिए सर्वप्रथम आवश्यक है कि वह, गुरु, मन्त्र और मन्त्र-देवता के प्रति पूर्ण समर्पित हो। मन्त्र, देवता और गुरु में सम्पूर्ण आस्था रखते हुए उनमें 'एक्य' भाव रखना चाहिए, तभी मन्त्र सिद्ध होता है। तभी गुरु और देवता की कृपा प्राप्त होती है। एक साधक को मन्त्र-सिद्धि के लिए धैर्य की आवश्यकता होती है। जिन लोगों में धैर्य न हो, डरपोक प्रकृति के हों, मन्त्र और गुरु के प्रति पूर्ण आस्थावान न हों, ऐसे लोगों के लिए यह क्षेत्र नहीं है। चंचल प्रवृति के लोग, जिनके चित्त और मति भ्रमित रहते हों, वे भी इस क्षेत्र में पदार्पण न करें, तो ही अच्छा है, क्योंकि ऐसे लोगों को सिद्धि-प्राप्ति होना सम्भव ही नहीं है।

साधना-उपासना में मन्त्र की प्रधानता होती है। मन्त्र दिखने में भले ही छोटा लगता हो, परन्तु उसका प्रभाव अत्यन्त ही तीव्र होता है। उनकी शक्ति परमाणु से भी अधिक विस्फोटक होती है, आवश्यकता है भाव की गहनता की। व्यक्ति/साधक का भाव जितना अधिक गहन होगा, उसका मन्त्र उतना ही अधिक प्रभावी होगा। भाव के बिना कोई सिद्धि नहीं होती। भाव-हीनता की अवस्था में साधक भले ही लाखों मन्त्रों का जप कर ले, असंख्य जप कर ले, उसे कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। इसके लिए बहुत ही आवश्यक यह है कि जो भी साधना, जो भी मन्त्र-जप आप कर रहे हैं, उसके प्रति पूर्ण विश्वस्त रहें और उसी भाव में लीन हो जायें। स्वयं को मन्त्रों के भाव में इतना डुबो दें कि अपनी भी सुध न रहे; अपना अस्तित्व भी विस्मृत हो जाये। साधक की ऐसी स्थिति होने पर ही उसकी विशिष्ट ऊर्जा विशिष्ट स्थान पर केन्द्रित होने लगती है। धीरे-धीरे उसमें वृद्धि होती जाती है, जिसे शरीर अपने रोमछिद्रों तथा हथेलियों के द्वारा बाहर निकालता है। आज्ञा चक्र के माध्यम से इस निष्कासित होने वाली ऊर्जा को ही नियंत्रित करके सिद्धि प्राप्त की जाती है।

Sumit Girdharwal Ji & Sri Yogeshwaranand Ji
+91-9410030994, +91-9917325788 Email : shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.info , www.yogeshwaranand.org

हम जानते हैं कि हमारी देह ब्रह्माण्ड का ही एक सूक्ष्म रूप है जो असंख्य अणुओं के सहयोग से बना है। ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म स्वरूप होने के कारण ही हमारे शरीर में स्थित ऊर्जा केन्द्र ब्रह्माण्ड में स्थित ऊर्जा केन्द्र से सम्बद्ध है। हमारी रीढ़ में स्थित तीन ऊर्जा धाराएं एक-दूसरे से गुथी रहती हैं, जिन्हें हम इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के नाम से जानते हैं। इन्हें गंगा, यमुना और सरस्वती भी कहा जाता है। ये परस्पर जिस स्थान पर मिलती हैं, अथवा लिपटने के क्रम में काटती हैं, वहीं एक गुच्छा सा बन जाता है, जिससे उस स्थान पर अत्यन्त सूक्ष्म तरंगों का उत्पादन होने लगता है। ये ही वे स्थान हैं, जिन्हें हम 'चक्र' के नाम से जानते हैं। इन्हीं बिन्दुओं अथवा चक्रों पर ध्यान केन्द्रित करने से ऊर्जा में वृद्धि होने लगती है, और देह में एक अनोखी शक्ति का संचार होने लगता है। इसी शक्ति के कारण चमत्कार होने लगते हैं। जिस बिन्दु अथवा चक्र की ऊर्जा में वृद्धि होती है, उसी के गुण प्रबल हो उठते हैं। जब उस बिन्दु के गुण में विशिष्ट वृद्धि होने लगती है, बस वही चमत्कार को जन्म देती है। इन चक्रों का आकार शिवलिंग जैसे स्वरूप का होता है। त्रिभुजाकार स्वरूप में लिंगाकार स्वरूप का निरंतर घर्षण चलता रहता है (इंजन में पिस्टन के समान) जिससे निरंतर ऊर्जा प्रवाहित होती रहती है। एक बिन्दु से स्रावित होने वाली ऊर्जा दूसरे बिन्दु (चक्र) से स्रावित होने वाली ऊर्जा से भिन्न होती है। इनके आकार, स्वरूप, रंग, गति तथा गुणों में विशेष अंतर होता है। साधक अपने 'आज्ञा चक्र' के द्वारा (जिसके अधिष्ठाता देवता 'शिव' अथवा 'रुद्र' हैं) जिस बिन्दु अथवा चक्र पर विशेष ध्यान लगाता है, उसी बिन्दु से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा प्रबल आवेशित हो उठती है और विभिन्न भेदों से आकार ग्रहण करती है। यही वह ऊर्जा शक्ति है, जिससे उत्पन्न होने वाली तरंगों को हमारे पूज्य महर्षि, ऋषि-मुनि, देवी-देवताओं के विभिन्न स्वरूप

मानकर उनकी उपासना करते थे। देवी-देवताओं के ये सभी स्वरूप इन ऊर्जा केन्द्रों से उत्सर्जित होने वाली तरंगों के ही परिणाम हैं।

पूजा के दो भेद हैं : 'अन्तर्याग' एवं 'बहिर्याग'। बाह्य पूजन में हम जो प्रतिमाएं अपने सामने रखते हैं, वे केवल भाव-मूर्तियां हैं। उन्हें देखने से जो भाव उत्पन्न होते हैं वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। जिस भी देवी-देवता की हम मूर्ति-पूजा करते हैं, उसके स्वरूप को देखकर ही हमारे मन में उस भाव का जागरण होने लगता है। यदि हम काली देवी की प्रतिमा को देखते हैं, उनका पूजन करते हैं तो उनके स्वरूप के अनुसार ही हमारे मन में भाव आने लगते हैं। इसी प्रकार यदि हम हनुमान जी की प्रतिमा पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो वैसे ही स्वरूप व गुणों की उत्पत्ति हमारे मन में होने लगती है। भाव का सीधा प्रभाव ऊर्जा उत्पादन वाले चक्र पर पड़ता है। परिणामस्वरूप उस भाव से सम्बन्धित ऊर्जा का उत्पादन उस बिन्दु से होने लगता है। जैसे-जैसे ध्यान और भाव में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे ही सम्बन्धित चक्र से ऊर्जा का उत्सर्जन होने लगता है और वे अपने लिए ब्रह्माण्ड (बाह्य) में उपलब्ध उपयोगी तरंगों को अपनी ओर आकर्षित करके उनका संग्रहण करने लगती है। जिसका प्रभाव यह होता है कि जिस कर्म के सम्पादन हेतु हम अपना भाव (साधना) केन्द्रित कर रहे हैं, उस कार्य का सम्पादन करने की ऊर्जा अथवा शक्ति हमारे भीतर प्रबल हो उठती है। आज्ञा चक्र उस ऊर्जा से उत्पन्न तरंगों को निर्देशित करके अभीष्ट की पूर्ति कराता है। हमारे समाज में जो हवन और अनुष्ठानों का सम्पादन किया जाता है, उनका वास्तविक प्रयोजन यही है कि जो सामग्री हवन में प्रयुक्त की जाती है, जलने के उपरान्त वह वायु में जो तरंगें उत्पन्न करती हैं, वे हमारे द्वारा सम्पादित किये जाने वाले कर्म के लिए उपयोगी होती हैं। उन तरंगों को हमारी तरंगें ग्रहण कर लेती हैं और परिणामस्वरूप हमें अभीष्ट की प्राप्ति होती है। यही कारण है कि हवन आदि में विशिष्ट काम्य कर्मों हेतु

विशिष्ट सामग्री का प्रयोग करने हेतु निर्देश दिये गये हैं। इन्हीं तरंगों से आवेशित होने के कारण होम की राख और धुएं आदि को विशेष उपयोगी समझा जाता है।

इस प्रकार हमारा 'आज्ञा-चक्र' जो दोनों भोहों के मध्य स्थित है और जिसे 'त्रिकुटि' कहा जाता है, उसका महत्व किसी भी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए सर्वोपरि है। यदि यह चक्र बिगड़ जाये तो व्यक्ति पागल हो जाता है। आपने सुना होगा कि 'अमुक' व्यक्ति 'अमुक' साधना करते हुए पागल अथवा विक्षिप्त हो गया। इस विक्षिप्तता का यही कारण है कि जिस साधना को हम सम्पन्न करते हैं, उसमें ऊर्जा के केन्द्र से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा से प्रवाहित तरंगों को हम कन्ट्रोल नहीं कर पाते, उन्हें सही दिशा-निर्देश नहीं दे पाते। परिणामस्वरूप हमारा आज्ञा-चक्र बिगड़ जाता है, जो विक्षिप्तता का कारण बनता है।

'आज्ञा-चक्र' के देवता को भगवान शिव, रुद्र, विश्वदेवा, हाकिनी आदि के नाम से विभिन्न सम्प्रदाओं में जाना जाता है। इस चक्र से उत्सर्जित होने वाली तरंगें वास्तव में एक ड्राइवर के समान हैं, जो किसी भी चक्र अथवा बिन्दु से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा की तरंगों को नियंत्रित करती है। परंतु यदि किसी वाहन का ड्राइवर ही अनियंत्रित हो जाये अथवा अपना संतुलन खो बैठे तो जरा सोचिये कि वाहन का क्या परिणाम होगा? बस यही स्थिति इस चक्र की है। इसलिए जब तक इस चक्र को परिपक्व साधित न किया जाये, तब तक ऊर्जा से उत्पन्न और मन से उत्पन्न तरंगों को हम नियंत्रित नहीं कर सकते। मन की तरंगें इतनी चंचल होती हैं कि वे एक स्थान अथवा विचार पर टिक ही नहीं सकतीं। यदि हमारा आज्ञा-चक्र एकाग्र, परिपक्व और साधित हो तो कोई भी तरंग इसके विपरीत नहीं जा सकती। शक्तिशाली तरंगों को यही वश में कर सकता है। यही कारण है कि तंत्र-साधना करने वाले लोग सर्वप्रथम

‘रुद्र’, ‘महाकाल’, ‘हाकिनी’, और वैदिक लोग ‘विश्वदेवा’ की साधना सम्पन्न करते हैं।

हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि संभवतः इस तथ्य से परिचित हो चुके थे और शायद यही कारण था कि वे अपने शिष्यों को खूब सोच-समझकर ही साधना सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करते थे। शायद इसी से वे मूर्खों और धूर्तों को ज्ञान देना उचित नहीं समझते थे। मूर्खों को ज्ञान देने की अपेक्षा वे उस ज्ञान को साथ लेकर मर जाना उचित समझते थे।

जिस प्रकार हमारी देह इस विराट ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म पिण्ड है, उसी प्रकार इस सृष्टि के प्रत्येक कण में सूक्ष्म ब्रह्माण्ड उपस्थित है। प्रकृति के कण-कण में वह सब कुछ उपलब्ध है, जो इस ब्रह्माण्ड में उपस्थित है। जिस प्रकार ऊर्जा का संचार ब्रह्माण्ड में होता है, उसी प्रकार कण-कण में भी होता है। मन्त्र-जप के लिए अनेकों स्थानों पर यह कहा जाता है कि उक्त मन्त्र का जप ‘अमुक’ विशिष्ट वृक्ष के नीचे करें। इसका एकमात्र कारण यही है कि उस पेड़ से उत्सर्जित होने वाली तरंगों में वह गुण है, जिसकी आपको आवश्यकता है। पेड़ों, जड़ी-बूटियों आदि में से इसी प्रकार की तरंगें निकलती रहती हैं। इस प्रकार ये ही तरंगें प्रत्येक जीव में और प्रत्येक वनस्पति में विद्यमान हैं। ये तरंगें ही हमारे देवी-देवता हैं। सुमेरू पर्वत हमारे भीतर भी है, जो मेरू दण्ड के रूप में विद्यमान है। समस्त देवी-देवता-राक्षस भी हमारे भीतर ही विद्यमान हैं। कैलाश पर्वत भी हमारे सहस्रार का ही स्वरूप है, जहां शिव निवास करते हैं।

उपर्युक्त समस्त कथ्य को कहने का मेरा अभिप्राय एकमात्र यही है कि यह समस्त ब्रह्माण्ड आज्ञा-चक्र की तरंगों से नियंत्रित होता है। ये तरंगें ही रुद्र हैं। यह जितना अधिक प्रभावी होगा जितना अधिक परिपक्व होगा, साधना में उतनी शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी। इसलिए यह आवश्यक है कि सबसे पहले रुद्र अर्थात् शिव की साधना की जाये। त्रिकुटी में ध्यान लगाने का निर्देश

इसीलिए दिया जाता है। स्त्रियों का भावचक्र अधिक शक्तिशाली होता है, इसलिए उन्हें साधना में सफलता शीघ्रता से मिलती है। काली, दुर्गा, भैरव, लक्ष्मी आदि जड़त्व प्रधान देवी-देवता भी स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा शीघ्रता से सिद्धि प्रदान करते हैं, इसलिए वामाचारी साधनाओं में स्त्रियों को 'भैरवी' के रूप प्रयोग करते हुए उन्हें प्राथमिकता प्रदान की गयी है, जबकि धनात्मक देवता, जैसे– रुद्र, शिव, गणेश, हाकिनी, उमा जैसे देवी-देवता स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों के लिए शीघ्र सिद्धिदायक होते हैं। स्थूल 'चक्र-पूजन' भी ऐसी ही ऊर्जा प्राप्ति का एक मुख्य साधन है।

इन्हीं सब कारणों से त्रिकुटी में ध्यान लगाते हुए साधना करने के निर्देश दिये जाते हैं। आज्ञा-चक्र पर तिलक लगाने का भी यही कारण है। इस चक्र पर जिस पदार्थ तथा रंग का तिलक लगाया जायेगा, मानसिक शक्ति उसी भाव से प्रभावित होगी।

हमारे शास्त्र स्पष्ट करते हैं कि कलियुग में तन्त्र ही प्रभावी है, न कि वैदिक-मन्त्र। इन वैदिक विधानों की बहुत ही लम्बी और उबाऊ प्रक्रिया है। इनमें अभीष्ट-सिद्धि भी बहुत देर से प्राप्त होती है। तन्त्र के प्रभावी होने का आज विशेष कारण यह भी है कि पृथ्वी पर काली की तरंगें प्रधान हैं। दिन के समय दुर्गा की तरंगें सबल रहती हैं और रात्रि में काली की तरंगें प्रभावी रहती हैं।

वाम मार्ग में संयम की कठोरता इतनी अधिक और उबाऊ नहीं है। इस मार्ग में तकनीक, वानस्पतिक-योग, तन्त्र-सामग्री और शरीर के अंगों का महत्व है, जिन्हें साधना पड़ता है। इन योगों से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, उसे नियंत्रित करने का कार्य ही साधक को करना पड़ता है। इस नियंत्रण के लिए ही साधना की जाती है।

यह सब कहने का उद्‌देश्य एकमात्र इतना ही है कि साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए अपने कर्म के अनुसार भाव बनाएं और उसी में डूब जायें। मानसिक शक्ति को प्रबल, दृढ़ तथा स्थिर बनाने के लिए ही साधना की जाती है। यदि कोई व्यक्ति गहन भाव में डूबकर कुछ क्षणों के लिए भी स्वयं के अस्तित्व को विस्मृत कर दे तो उसके लिए कोई भी सिद्धि दुर्लभ नहीं है।

साधना के द्वारा सिद्धि प्राप्त करने के लिए कुछ आवश्यक नियम अनुकरणीय हैं, जैसे– चित्त शुद्ध और प्रसन्न रहना चाहिए। अपना आहार और दिनचर्या नियमित रखें। अपना शरीर, आचरण, खान-पान भी शुद्ध तथा संयमित रखना चाहिए। षट्कर्मानुसार निर्देशों का अनुपालन करते हुए किसी वस्तु को लाना या ले जाना हो तो उसे विधि-विधान से ही लायें अथवा ले जायें। तन्त्र के अनुसार यदि किसी भी वृक्ष अथवा पौधे आदि का कोई अंग इन प्रयोगों के लिए लाया जाता है तो उसके लिए एक पूर्ण विधान है। इन्हें लाने से एक दिन पूर्व नियमानुसार इन्हें न्यौता देना होता है। तदोपरान्त अगले दिन उसकी पूजा आदि करने के उपरान्त ही उसे घर लेकर आते हैं और प्रयोग में लाते हैं। इसी प्रकार अनेकों ऐसे आवश्यक निर्देश वाम मार्ग में हैं, जिनका अनुकरण आवश्यक है।

भूत–शुद्धि

मन्त्र-साधना से पूर्व साधक को आवश्यक है कि वह आन्तरिक और बाह्य-शुद्धि कर ले। बाह्य-शुद्धि स्नान आदि से, आन्तरिक शुद्धि आचमन और प्राणायाम से होती है। इस साधना काल में 'भूत-शुद्धि' भी अत्यन्त आवश्यक है। भूत-शुद्धि के द्वारा हमारे पूर्व कृत दोषों का निवारण होता है। साधकों ने अनेकों अवसरों पर यह अनुभव किया होगा कि उनके द्वारा किये जाने वाले जपों का कोई प्रभाव उन्हें परिलक्षित ही नहीं होता। इसका मुख्य कारण यह है

कि हमारे आराध्य देव सर्वप्रथम हमारे दुष्कर्मों और पूर्वजन्य दोषों का निस्तारण करते हैं। इसलिए हमारा अथक और असंख्य जप इन कर्मों का निस्तारण करने में ही व्यय हो जाता है। उसके बाद जब हम सर्वथा साफ-सुथरे हो जाते हैं, तब उन मन्त्रों का प्रभाव दिखाई देना आरंभ होता है। एक आधा-अधूरा साधक इस लम्बी-प्रक्रिया और अधैर्य के कारण निराश हो जाता है। वह समझने लगता है कि मन्त्र आदि सब व्यर्थ हैं, जबकि वास्तव में ऐसा होता नहीं है। इसके लिए मैं एक उदाहरण आपको बताना चाहूंगा। इस समय मुझे उस साधक का नाम स्मरण नहीं पड़ रहा है, इसलिए सुविधा की दृष्टि से उसका नाम 'रामशरण' रख लेते हैं।

इन रामशरण जी ने भगवती काली की साधना आरंभ की। धीरे-धीरे एक अंतराल तक कठोर साधना करते हुए उन्होंने भगवती के आठ अनुष्ठान पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न किये। साधना करने का उनका मुख्य उद्देश्य भगवती के दर्शन प्राप्त करना था। परंतु आठ अनुष्ठान पूर्ण कर लेने के बाद भी उन्हें भगवती काली का साक्षात्कार नहीं हुआ। इससे वे गहन निराशा में डूब गये और आगे कोई अनुष्ठान सम्पन्न करने का विचार उन्होंने त्याग दिया। इस साधना-क्रम को निरंतर चलाने और कोई उपलब्धि प्राप्त न होने के कारण वे विचलित हो उठे और अपना साधना-स्थल छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने का उन्होंने संकल्प कर लिया।

अपने इसी विचार के चलते उन्होंने साधना स्थल छोड़ दिया और बनारस पहुंच गये। स्टेशन से बाहर निकलने पर उन्होंने देखा कि एक मदारी तमाशा दिखा रहा है। उसके चारों ओर काफी भीड़ लगी थी। उस भीड़ में से कोई भी व्यक्ति फल-फूल आदि की इच्छा प्रकट करता और पलक झपकते ही वे मदारी महोदय अपना हाथ हवा में हिलाते और वांछित वस्तु उनके हाथ में प्रकट हो जाती।

रामशरण जी यह करतब देखकर हैरान रह गये। उन्होंने मन ही मन विचार किया कि एक ओर मैं हूं, जिसने साधना करते-करते एक लम्बी अवधि यूं ही व्यर्थ कर दी और कुछ भी प्राप्त न कर सका। दूसरी तरफ यह मदारी है कि जब जो इच्छा करता है, वही वस्तु प्राप्त हो जाती है। मुझसे अच्छा तो यही है।

ऐसा विचार करते-करते रामशरण जी का मन विचलित हो उठा। उनके मन में भी मदारी को गुरु बनाने और उससे यह विद्या जानने की इच्छा प्रबल हो उठी। अतः खेल समाप्त होने तथा भीड़ के चले जाने पर उन्होंने अपनी आकांक्षा उस मदारी के सामने व्यक्त की। पहले तो मदारी ने स्पष्ट इंकार कर दिया, परंतु उनके बार-बार आग्रह करने पर वह तैयार हो गया। उसने रामशरण जी को बताया कि उनको यह सिद्धि एक पखवाड़े में ही प्राप्त हो जायेगी। रामशरण जी उस मदारी के साथ उसके घर चले गये। अनुकूल समय देखकर उस मदारी ने उन्हें वह साधना बतायी, जिसे रामशरण जी ने ग्रहण करते हुए नियत अवधि के भीतर ही सिद्धि प्राप्त कर ली। अब रामशरण जी जब भी कोई वस्तु मंगाना चाहते, वही वस्तु उन्हें प्राप्त हो जाती। परंतु बाधा यह थी कि प्राप्त होने वाली का उपयोग वे स्वयं नहीं कर सकते थे। दूसरी बात यह थी कि अधिक मूल्य वाली वस्तु को पैसा (कीमत) देकर ही प्राप्त किया जा सकता था। यह प्रतिबन्ध ही उनकी इस सिद्धि के आनन्द को निर्मूल कर देता था।

रामशरण जी एक अच्छी श्रेणी के साधक थे। भगवती की साधना-उपासना किये उन्हें काफी समय बीत चुका था। इस प्राप्त सिद्धि का आकर्षण भी उनके लिए समाप्त हो गया था। वह मन ही मन पुनः अपने इष्ट देवता के प्रति आकर्षित होने लगे।

एक रात्रि में वे इसी असमंजस की स्थिति में थे। लेटे-लेटे उन्हें निन्द्रा आ गयी। उन्होंने स्वप्न में देखा कि भगवती काली उनके सामने खड़ी हैं, जिनसे वे अपने गिले-शिकवे कर रहे हैं। पहले तो वे सब कुछ सुनती रहीं। बाद में उनसे बोलीं कि तू यही जानना चाहता है ना कि मैं तेरे समक्ष प्रकट क्यों नहीं हुई? ले देख! इसका कारण तू स्वयं जान ले।

रामशरण जी ने देखा कि वे एक भयानक पठार में खड़े हुए हैं। वहां चारों ओर घने और ऊंचे-ऊंचे पत्थर उनके सामने खड़े हुए हैं। वे उस पार जाना चाहते हैं, परंतु उन ऊंची पहाड़ियों के कारण जा नहीं पा रहे हैं। अचानक उनके सामने से वे पहाड़ियां गायब होनी शुरू हो जाती हैं। एक के बाद एक, धीरे-धीरे, वे सभी पहाड़ी अदृश्य हो जाती हैं। अब वे एक रेगिस्तान में फंसे हुए हैं, जहां बहुत से कांटेदार पेड़ उगे हुए हैं। वे आगे बढ़ते हैं। धीरे-धीरे वे पेड़ भी गायब हो जाते हैं। तभी कुछ भयंकर और काले-राक्षस जैसे लोग उनकी ओर भयानक हथियार लेकर झपटते हैं, परंतु वे स्वतः ही लहुलुहान होकर गिर जाते हैं। तभी रामशरण जी अपने गन्तव्य की ओर बढ़ना चाहते हैं। अचानक वे देखते हैं कि एक दलदल वाली गहरी खाई उनके सामने है। वे इस पार खड़े हुए हैं। इस खाई के दूसरे किनारे पर एक महिला, जो बहुत ही तेजस्विनी है, अपने हाथ में रस्सी की सीढ़ी सी लिये खड़ी हुई है। वह बार-बार उस रस्सी की सीढ़ी को रामशरण जी की ओर फेंकती है ताकि वे उसे पकड़ सकें। परंतु वह सीढ़ी बार-बार उनके हाथ से छूट जाती है। लाख प्रयास करने पर वे उसे पकड़ नहीं पाते और बैठकर रोने लगते हैं। इसके साथ ही यह दृश्य समाप्त हो जाता है और पुनः भगवती काली उन्हें अपने समक्ष दिखायी देती हैं वे उनकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हैं।

तब भगवती रामशरण जी को स्पष्ट करती है कि “वे पहाड़ और कांटों वाले वृक्ष तुम्हारे अशुभ कर्म थे, जो तुम्हारे जप के प्रभाव से मुझे काटने पड़े।

तुम्हारी साधना निरंतर चल रही थी और तुम मुझ तक पहुंचने ही वाले थे, परंतु मुझ तक पहुंचने में तुम्हारे कुछ अशुभ कर्म शेष थे, जो दलदल स्वरूप तुम्हारे और मेरे मध्य बाधा बने हुए थे। मेरे द्वारा फेंका जाने वाला रस्सी का पुल तुम इन्हीं अशुभ कर्मों के कारण पकड़ नहीं पा रहे थे। बस यदि यह अशुभ कर्म भी समाप्त हो जाता तो मैं तुम्हारे समक्ष प्रत्यक्ष हो जाती। परंतु तुम्हारा दुर्भाग्य यह रहा कि तुम विचलित हो गये। यदि तुम चाहते हो कि मेरी क्रोड़ (गोद) में आ जाओं तो एक अनुष्ठान और करो।" इतना कहकर भगवती अदृश्य हो गयी।

तभी रामशरण जी की आंखें खुल गयीं। उन्होंने उक्त स्वप्न पर गहन विचार किया और पुनः एक और पुरुचरण करने का संकल्प लिया। उचित समय देखकर उन्होंने एक और अनुष्ठान किया तथा भगवती का साक्षात्कार प्राप्त किया।

उक्त घटना को लिखने का मेरा यही मन्तव्य है कि कई बार सिद्धि प्राप्त न होते देखकर हम अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं। हमारे आराध्य देव चाहते हैं कि पहले आप दोषमुक्त हो जायें तब उनकी गोद में जाने योग्य हो पायेंगे। इन्हीं दोषों का निस्तारण आपके द्वारा किये जाने वाले अनुष्ठानों से होता है। स्मरण रखें कि विधिपूर्वक किया जाने वाला आपका कोई भी मन्त्र-जप व्यर्थ नहीं जाता। वह पहले आपको अशुभ कर्मों के बन्धन से मुक्त करता है। दोष-परिहार हो जाने के बाद ही आपको आपके अभीष्ट की प्राप्ति हो पाना संभव है। यदि आप चाहते हैं कि आपके जप आपको पूर्ण फल प्रदान करें तो पहले इन दोषों का परिहार करने का स्वतः ही प्रयास करें। इन दोषों के कारण ही ग्रहों की अशुभ दशाएं भी आपको प्रभावित करती हैं। इसलिए शास्त्रों का यही निर्देश है कि सदैव शुभ कर्म करो। जो भी अच्छा कर्म करो, उसे उस परम-पिता का निर्देश जानकर, वह कर्म उन्हें ही अर्पित कर दो। फल देना

उसका काम है, आपका काम केवल सत्कर्म करना है। अपने अशुभ कर्मों के निस्तारण हेतु भूत-शुद्धि नियमित रूप से पूजा-उपासना से पूर्व अवश्य करें। यही भूत-शुद्धि आपको अशुभ कर्मों को नष्ट करने में सहायता प्रदान करती है। इसीलिए वाम-मार्ग में भूत-शुद्धि पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। इस कर्म के प्रभाव से शरीरस्थ मलीन भूतों को भस्म करके नवीन दिव्य भूतों का निर्माण करना है।

नोट : जो लोग भूत-शुद्धि के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं वो हमारी हमारी पुस्तक. षट्कर्म विधान पढ़ें।
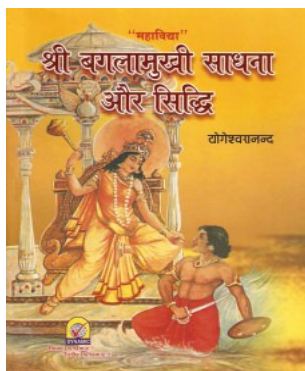
Mantra Sadhana Rs – 280/=
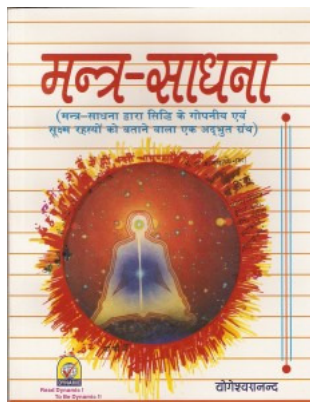
Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana Sri Yantra Pooja) - Rs 370/=
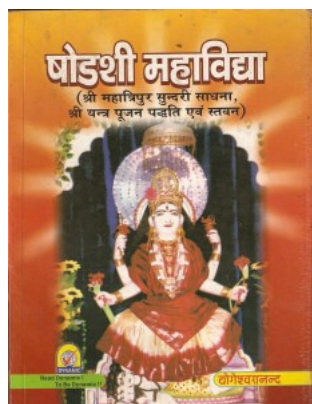
Shatkarma Vidhaan Rs – 380/=
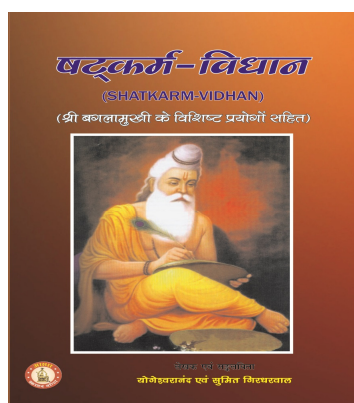
If you want to purchase any of our book then please deposit respective amount in below a/c –

Sumit Girdharwal

Axis Bank

912020029471298 (Current A/C)

IFSC Code – UTIB0001094

And send the receipt to our email sumitgirdharwal@yahoo.com or whatsapp +91-9410030994

षट्कर्म-विधान

(SHATKARM-VIDHAN)

(श्री बगलामुखी के विशिष्ट प्रयोगों सहित)
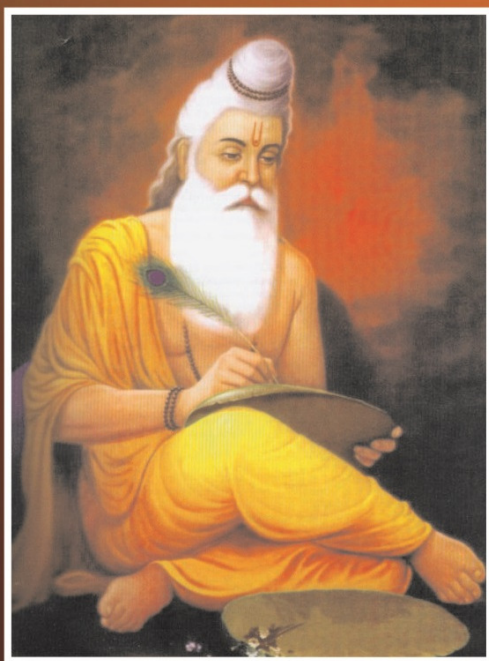
लेखक एवं सङ्कलयिता

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल

षट्कर्म-विधान

(SHATKARM-VIDHAN)

(श्री बगलामुखी के विशिष्ट प्रयोगों सहित)

लेखक एवं संकलयिता

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल

प्रकाशक

आस्था प्रकाशन मन्दिर

बागपत

"षट्कर्म-विधान"

योगेश्वरानन्द एवं सुमित गिरधरवाल

चेतावनी–

श्री वृद्धि और सुख-शान्ति के लिए मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र साधनाओं का विशेष महत्व है। परन्तु यदि किसी साधक को इस पुस्तक में दी गयी साधना के प्रयोग में विधिगत, वस्तुगत अशुद्धता अथवा त्रुटि के कारण किसी भी प्रकार की क्लेशजनक हानि होती है, अथवा कोई अनिष्ट होता है तो इसका उत्तरदायित्व स्वयं उसीका होगा। लेखक, प्रकाशक एवं मुद्रक उसके लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। अतः कोई भी प्रयोग योग्य व्यक्ति के सानिध्य में ही करें।

ISBN : 978-93-82171-66-9

मूल्य : ` 280/- रुपये

प्रथम संस्करण : 2016

शब्द-संयोजक
अतुल ग्राफिक्स, ट्रॉनिका सिटी, गाजियाबाद (उ०प्र०)

प्रकाशक : आस्था प्रकाशन मन्दिर
'हेमकुंज' कोर्ट रोड, गली नं. 6, भजन विहार कॉलोनी,
बागपत–250609, (उ.प्र.)
मोबाइल : 9410030994, 9540674788
Website : www.asthaprakashan.com
E-mail : ashthaprakashanmandir@gmail.com

मुद्रक : अवतार ऑफसेट

षट्कर्म हेतु विशिष्ट प्रयोग

- गणपति-प्रयोग
- हनुमत्-प्रयोग
- बगलामुखी-प्रयोग
- धनदा यक्षिणी-प्रयोग
- प्रत्यंगिरा-प्रयोग
- शीघ्र विवाह अघोरी प्रयोग
- सौन्दर्यलहरी के तान्त्रिक प्रयोग
- दुर्गा-तन्त्र-प्रयोग
- पीताम्बरा पंचास्त्र-प्रयोग
- धूमावती-तन्त्र-प्रयोग
- कालरात्री-प्रयोग
- भैरव-प्रयोग
- नवार्ण मन्त्र-प्रयोग
- शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण हेतु मिश्र प्रयोग
- विश्वावसु गंधर्वराज-प्रयोग

॥ श्रीयन्त्रम् ॥
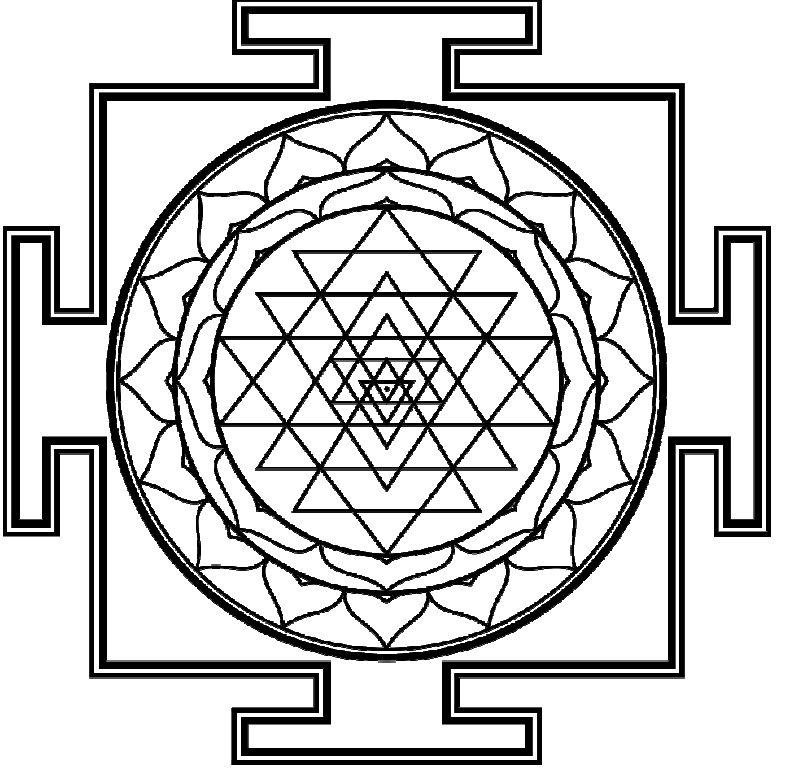
'चतुरस्रं त्रिवृत्तञ्च पत्रषोडशकं तथा।
अष्टदलञ्च मन्वस्रं दशारञ्च दशारकम्॥१॥
अष्टारकं त्रिकोणञ्च बैन्दवं चार्चयेत्क्रमात्।
एतच्चक्रात्मकं यन्त्रं श्रीताराया: प्रकीर्त्तितम्॥२॥'

दो शब्द

जब ऋण, शत्रु, रोग, मुकदमा आदि को निष्प्रभावी करने के सभी उपाय असफल हो जाते हैं, व्यक्ति स्वयं को पराक्रमहीन महसूस करने लगता है; भौतिक संसाधन एवं पुरुषार्थ की सभी सीमायें समाप्त हो जाती हैं, ऐसी परिस्थितियों में मनुष्य के समक्ष एक ही विकल्प शेष रह जाता है, वो है परमात्मा की शरण। विभिन्न देवी-देवताओं की शरण। ऐसी स्थिति में वह तन्त्रों-मन्त्रों का आश्रय लेता है, जिसके लिए वह भिन्न-भिन्न योग्य आचार्यों का सहारा लेता है। ऐसी अवस्था में विद्वजन यजमान के कष्टों के निवारण हेतु षट्कर्मों का प्रयोग करते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र के द्वारा षट्कर्मों का सम्पादन करने की रुचि प्रायः सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों में होती है। ये षट्कर्म– शांति, वशीकरण, स्तंभन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के नाम से जाने जाते हैं। किसी भी यजमान अथवा कुयोग से प्रभावित व्यक्ति को लाभ पहुंचाने के लिए साधक को इन्हीं षट्कर्मों से सम्बन्धित प्रयोगों का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है।

यह एक सर्वविदित और कठोर सत्य है कि अधिकांश साधक अपनी इच्छापूर्ति अथवा यजमान की कामना के अनुसार फल-प्राप्ति के लिए ही अनुष्ठान-विधान करते हैं। ऐसे साधक बहुत ही कम संख्या में हैं जो निष्काम भाव से साधना करते हों। यद्यपि कुछ साधक ऐसे भी हैं जो मोक्ष-प्राप्ति के लिए साधना करते हैं। लेकिन यह कर्म भी वासनापरक है। परंतु चूंकि इस साधना का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं है अतः यह निकृष्ट कर्म नहीं है, लेकिन है काम्य कर्म ही।

आज प्रत्येक चार में से तीन व्यक्ति किसी न किसी समस्या से त्रस्त हैं। उनकी समस्याओं के समाधान हेतु साधक को ऐसे प्रयोगों की आवश्यकता होती है, जो उनकी समस्याओं का त्वरित निदान कर सकें। ऐसी ही आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए षट्कर्मों का सम्पादन करना आवश्यक हो जाता है। बस इन्हीं आवश्यकताओं की परिपूर्ति के लिए इस ग्रंथ की रचना की गयी है।

यद्यपि मेरे गुरुदेव श्री योगेश्वरानन्द जी द्वारा इस ग्रंथ की रचना कई वर्षों पूर्व कर दी गयी थी, किंतु अपरिहार्य कारणों से इसका सम्पादन एवं प्रकाशन संभव नहीं हो सका। अंततः मां पीताम्बरा की असीम अनुकम्पा हुई और मैंने स्वयं ही इस ग्रंथ का सम्पादन एवं प्रकाशन का भार अपने कंधे पर लिया, ऐसे में मां पीताम्बरा की अनुकम्पा से 'श्री अनिल सिंह राठौर' जी से भी सम्पर्क हुआ, जो अत्यन्त

धर्मनिष्ठ और प्रकाशन के क्षेत्र में एक अनुभवी एवं सुयोग्य व्यक्ति हैं। उनका सानिध्य एवं सहयोग मिला तो इस ग्रंथ के प्रकाशन का भार सहज ही स्वीकार कर लिया और परिणामतः यह आपके गरिमामय हाथों में उपलब्ध है। इस ग्रंथ की एक उपलब्धि यह भी रही कि इसी के साथ ही 'आस्था प्रकाशन मन्दिर, बागपत' प्रतिष्ठान की नींव भी पड़ गयी।

यदि मां बगला की अनुकम्पा रही तो वर्षों से प्रतिक्षित ''श्री बगलामुखी-साधना-रहस्य'', "द्वितीय महाविद्या श्री तारा-साधना और सिद्धि'', ''आगम-रहस्य'', ''अघोरी'' और ''यन्त्र-साधना'' जैसे उत्कृष्ट ग्रंथ भी अति शीघ्र ही 'आस्था प्रकाशन मन्दिर, बागपत' के माध्यम से आपके हाथों में होंगे। आपके आशीर्वाद एवं शुभ कामनाओं की प्रतिक्षा मुझे सदैव रहेगी।

आपका अपना...

सुमित गिरधरवाल

Phone : 9410030994, 9540674788
Email : sumitgirdharwal@yahoo.com
Website : www.baglamukhi.info

विषयानुक्रमणिका

विषय पृष्ठ संख्या

दो शब्द v–vi

अपनी बातें, अपनों से vii–xi

भूमिका xiii–xvi

1. षट्कर्म-विधान 1–14

स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिकरण, पौष्टिक, सांतनिक, षट्कर्मों के देवता, षट्कर्मों की दिशा, ऋतुकाल निर्णय, एक दिन में छहों ऋतुओं का समय, षट्कर्मों के वर्ण, षट्कर्मों के तिथि एवं दिन, तिथि-विचार, सिद्धि योग चक्रम, मृत्यु योग निर्णय, नक्षत्र विचार, लग्न विचार, योगिनी विचार, योगिनी चक्रम, तत्व-विचार, दिशाशूल विचार, हवन-विचार, आसन विचार, साधना-स्थल विचार, जप अंगुली विचार, समिधा-विचार, माला व दानों की संख्या का विचार, मन्त्र ग्रहण करने हेतु मास चिचार।

2. मन्त्र-सिद्धि रहस्य 15–32

भूत-शुद्धि, विशिष्ट ज्ञातव्य तथ्य, तन्त्र प्रयोगों में स्मरणीय तथ्य।

3. मन्त्र-योग 33–54

मन्त्र की आवश्यकता, मन्त्रों की तीन जातियां, मन्त्रों की संज्ञा, विविध अवस्थाओं में सिद्धिदायक मन्त्र, मन्त्रों के दोष, मन्त्र-संस्कार, विन्यास, संक्षिप्त पुरश्चरण विधि, अग्नि आह्वान, अग्नि-विधान, लेखन, लेखनी एवं द्रव्य-विचार, आहार, तर्पण-द्रव्य, पात्र-विधान, तर्पण-स्थिति, न्यास-विधान, स्थान-निर्णय, पीठिकाएं, मन्त्रों में ध्वनि प्रयोग, सिद्धि-असिद्धि-विचार, राशि चक्र-विचार, चक्र-विचार, सिद्धादि शोधन, मन्त्र शोधन के अपवाद, अरिमन्त्र का त्याग, कलिकाल में सद्य सिद्धिदायक मन्त्र।

4. माला-संस्कार 55–58

सद्योजात मन्त्र।

5. शाबर-सिद्धि-विधान 59–62

शाबर-सिद्धि और समय, साधना में आवश्यक सामग्री, सर्वार्थ साधन मन्त्र, शरीर रक्षा मन्त्र, शाबर सिद्धि के अन्य प्रयोग, रक्षा हेतु अन्य मन्त्र।

6. यज्ञ एवं कुण्ड 63–68

यज्ञ के दो भेद, कुण्ड निर्माण में आवश्यक विधान, भूमि विचार, नाभि एवं मेखला विचार, कण्ठ-विचार, मण्डप आच्छादन विचार, प्रधान कुण्ड विचार, परिमाण एवं निर्माण विचार, अन्य विचार, वर्णानुसार कुण्ड विचार, मेखला विचार, कुण्ड-परिमाण विचार, कुण्ड निर्माण में माप।

प्रयोग-विभाग

7. शान्ति-कर्म 69–100

गणपति मन्त्र, षडक्षर वक्रतुण्ड मन्त्र, लक्ष्मी प्राप्ति और वाक् सिद्धि हेतु शाबर मन्त्र, पशुओं द्वारा अचानक दूध देना बन्द हो जाये, सर्व-शान्ति-प्रयोग, सफलता-प्राप्ति मन्त्र, सर्व-कार्य सिद्धि गणपति मन्त्र, धन-प्राप्ति हेतु जैन शाबर मन्त्र, सर्व-रोग-नाशक शाबर मन्त्र 1, 2, 3, सर्व-कार्य सिद्धि हेतु बंगाली शाबर मन्त्र, थनैला रोग निवारण मन्त्र, कन्या के शीघ्र विवाह हेतु प्रयोग, रामभक्त हनुमान द्वारा संकट निवारण, कारागार से छूटने का मन्त्र : विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास, माला-मन्त्र, शत्रुंजय हनुमत्स्तोत्र, बगलामुखी द्वारा आर्थिक समृद्धि एवं विजय प्राप्ति : ध्यान, मृत्युंजय मन्त्र, बगला गायत्री, शत्रु-बाधा, राजकीय-बाधा, प्रेतोपद्रव के कारण व्यवसाय बन्द होने पर मन्त्र, भक्त मंदार मन्त्र, धनदा यक्षिणी प्रयोग, अभिचार-निग्रह, विपरीत प्रत्यंगिरा-प्रयोग : ध्यान, विनियोग, करन्यास, माला-मन्त्र, स्तोत्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, श्री काली प्रत्यंगिरा, सर्व-कष्ट निवारक मन्त्र, घर कीलना, शीघ्र विवाह हेतु अघोर गौरी मन्त्र-1 व 2।

8. वशीकरण-प्रयोग 101–128

वशीकरण मन्त्र-1, 2, 3 प्रयोग विधि सहित, आकर्षण, शाबर मन्त्र-4, 5, 6, 7, 8, पंजाबी शाबर मन्त्र, सौन्दर्य लहरी के तान्त्रिक

प्रयोग : वशीकरण, वशीकरण एवं कवित्व शक्ति : विनियोग, करांगन्यास, ऋष्यादिन्यास, शापोद्धार, मन्त्र, सिद्धि-विधि, मानसोपचार-पूजन, सर्व-वशीकरण प्रयोग, प्रयोग-विधि, यन्त्र, विनियोग, करांगन्यास, हृदयादिन्यास, ऋष्यादिन्यास, जप-मन्त्र, विधि, स्त्री-वशीकरण, प्रयोग-विधि, विनियोग, ध्यान, विधि, दुर्गा-तन्त्र : लवण दुर्गा-मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, अक्षरन्यास, ध्यान (वशीकरण, शत्रुनाश, मारण), पूजन यन्त्र, प्रयोग-विधि, आसुरी दुर्गा-प्रयोग : प्रयोग-विधान, मन्त्र, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, करन्यास, हृदयादिषडंगन्यास, अथर्वापुत्री आसुरी दुर्गा का ध्यान।

9.स्तम्भन-कर्म 129–140

गर्भ-स्तम्भन : मन्त्र, साधना एवं प्रयोग-विधि, स्वयं सिद्ध प्रयोग, सर्प एवं विष स्तम्भन : मन्त्र, सिद्धि एवं प्रयोग-विधि, बुद्धि स्तम्भन

प्रयोग : सिद्धि एवं प्रयोग विधि, प्रबल स्तम्भन प्रयोग, विमर्श, स्तम्भनकारक गौड़ीय शाबर मन्त्र : प्रयोग विधि, स्तम्भनकारक केरलीय शाबर मन्त्र : प्रयोग विधि, सर्वजन-मुख स्तम्भन मन्त्र : साधना-विधि, त्रैलोक्य स्तम्भन मन्त्र : साधना-विधि, वाणी-स्तम्भन मन्त्र, स्तम्भन के उच्चप्रयोग : पीताम्बरा पंचास्त्र मन्त्रा– मूल मन्त्र, (1) वडवामुखी मन्त्र, ध्यान (2) उल्कामुखी मन्त्र : विनियोग, ध्यान (3) जातवेदमुखी : विनियोग, ध्यान (4) ज्वालामुखी : विनियोग, ध्यान (5) वृहद्भानुमुखी : मन्त्र, विनियोग, ध्यान।

10. विद्वेषण-कर्म 141–176

विद्वेषण हेतु शाबर मन्त्र (1) : मन्त्र, प्रयोग-विधि, प्रयोग (2) : मन्त्र, प्रयोग-विधि; विद्वेषण वाराही मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; गुर्जर कालरात्रि शाबर मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; धूमावती प्रयोग : मन्त्र, प्रयोग-विधि; अन्य विद्वेषण शाबर मन्त्र : मन्त्र, प्रयोग-विधि; महाभैरव मन्त्र : प्रयोग-विधि, मन्त्र-2, आंचलिक शाबर मन्त्र : विद्वेषण प्रयोग, मन्त्र, प्रयोग-विधि, निवारण; प्रयोग-2 : मन्त्र, प्रयोग-विधि; प्रयोग-3 : मन्त्र, प्रयोग-विधि; प्रयोग-4; 5, 6 मन्त्र एवं प्रयोग-विधि; विद्वेषण हेतु उच्च प्रयोग : कृत्या-निवारण सूक्त,

प्रत्यंगिरा-यन्त्रार्चन, कवच, स्तोत्र, मन्त्र, ध्यान, विनियोग, करन्यास, हृदयादिन्यास, लघु स्तोत्र (माला-मन्त्र), अन्य मन्त्र, स्तोत्र, विनियोग; प्रत्यंगिरा मन्त्र एवं प्रयोग-1, 2 व 3, विनियोग, षडंगन्यास, विनियोग, ध्यान, षट्विंशत्यक्षर मन्त्र : विनियोग, षडंगन्यास; अष्टविंशत्यक्षर मन्त्र : विनियोग, षडंगन्यास, दिग्बन्ध, ध्यान : चतुस्त्रिंशदक्षर मन्त्र, सप्तत्रिंशदक्षर : विनियोग, षडंगन्यास, पदन्यास, ध्यान, साधना-विधि, बलिमन्त्र, लोम-विलाम गायत्री पुटित-मन्त्र, ध्यान; माला-मन्त्र, विनियोग, ध्यान; अन्य सिद्ध मन्त्रा : शत्रु-निग्रह, विद्वेषण मन्त्र, शत्रु-पलायन, प्रयोग-विधि।

(3) जातवेदमुखी : विनियोग, ध्यान (4) ज्वालामुखी : विनियोग, ध्यान (5) वृहद्भानुमुखी : मन्त्र, विनियोग, ध्यान।

11. उच्चाटन-कर्म 177–192

मन्त्र, प्रयोग-विधि; मन्त्र– 1, 2, 3 व 4, कालिका-उच्चाटन-प्रयोग :

ध्यान, विधान; अन्य उच्चाटन-प्रयोग– 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12 सप्रयोग विधि; विभिन्न प्रान्तीय उच्चाटन शाबर मन्त्र : 1, 2, 3 व 4 सप्रयोग-विधि।

12. धूमावती तन्त्र 193–204

सप्ताक्षरी मन्त्र, ध्यान, विनियोग, षडंगन्यास, अष्टाक्षर मन्त्र : विनियोग, ऋषयादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, दशाक्षर, चतुर्दशाक्षर, पंचदशाक्षर मन्त्र (न्यास एवं विनियोग सहित), धूमावती-गायत्री; अष्टाक्षर मन्त्र-प्रयोग : ध्यान एवं न्यास सहित, आवरण-पूजा, प्रयोग-विधि, अघोर रुद्र, अस्त्र-वाराही, धूमावती-कवच।

13. कालरात्रि तन्त्र 205–218

मूल-ध्यान, काली क्रमोक्त ध्यान, षोडशी क्रमोक्त ध्यान, काली क्रमोक्त मन्त्र, षोडशी क्रमोक्त मन्त्र (विनियोग व न्यास सहित), मन्त्र

महौदधोक्त-विधान : मन्त्र, विनियोग, न्यास, ध्यान, पूजन, आवरण-पूजा; काम्य-प्रयोग साधन : आकर्षण, वशीकरण, मोहन-प्रयोग, दशाक्षरी मन्त्र, यन्त्र।

14. शत्रु-संहार-प्रयोग 219–230

गोरखनाथकृत काल भैरव-बटुक भैरव प्रयोग, भैरव शाबर मन्त्र-प्रयोग; सर्वसिद्धि भैरव शाबर मन्त्र; शत्रु-नाशक प्रयोग; बंगालिया भैरव-प्रयोग; शत्रु को डंडा मारना; मन्त्र– 1 व 2 सप्रयोग-विधि।

15. मिश्र-प्रयोग 231–242

नवार्ण-मन्त्र; साधना-विधि, विनियोग, ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, करन्यास, ध्यान, आकर्षण, सम्मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन व मारण-मन्त्र, जप संख्या-निर्णय, मोहन-कर्म, धूप-मन्त्र; वशीकरण प्रयोग; स्तम्भन-प्रयोग।

16. जैन धर्म के कुछ प्रभावशाली मन्त्र 243–252

वशीकरण हेतु मन्त्र; अग्नि-शान्ति; ज्वर-शान्ति; नारी-आकर्षण; संतान और सम्पत्ति-प्राप्ति; विवाह हेतु गंधर्वराज प्रयोग; साधना-विधान : न्यास, ध्यान, दिग्बन्धन, पीठशक्ति-न्यास, ध्यान, मानस-पूजा, मुद्राएं, विश्वावसु गायत्री, मूल मन्त्र, माला-मन्त्र।

षट्कर्म-विधान

"शान्ति वश्य स्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने ता।

मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः॥"

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान में ये छः कर्म : शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण बहुत ही प्रचलित शब्द हैं। इन छः कर्मों को ही षट्कर्मों के नाम से जाना जाता है और सत्यता यह है कि "तान्त्रिक" जन-सामान्य में इन्हीं षट्कर्मों के कारण ही बदनाम हैं। आम जन-जीवन में ये षट्कर्म आतंक का कारण बने हुए हैं। किसी तान्त्रिक, मान्त्रिक और अघोरी जैसे व्यक्ति को देखते ही सामान्य व्यक्ति भयभीत हो जाता है। वस्तुतः ये छहों 'काम्य-प्रयोग' कहलाते हैं। मान्त्रिकों ने इन काम्य-प्रयोगों का वर्णन इस प्रकार किया है–

स्तम्भनं मोहमुच्चाटं वश्याकर्षणजृम्भणम्।

विद्वेषणं मारणं च शान्तिकं पौष्टिकं तथा॥

पूर्वोक्त छहों कर्मों से नौ प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं जिनमें स्तम्भन, मोहन, उच्चाटन, वश्याकर्षण, जृम्भण, विद्वेषण, मारण, शान्तिकरण और पुष्टिकरण सम्मिलित हैं। कोई-कोई विद्वान 'सान्तनिक' प्रयोग को दसवां प्रयोग मानते हैं। इन कर्मों की स्पष्ट व्याख्या इस प्रकार है–

स्तम्भन : जिस मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र के करने से प्राणी, पशु, पक्षी, सर्प, शत्रुसेना (परचक्र) आदि की गति रोक दी जाये, किसी की वाणी अथवा कृत्य को जहां का तहां रोक दिया जाये, उसे स्तम्भन कहते हैं।

मोहन : जिस कर्म के द्वारा कोई व्यक्ति किसी को अपने वशीभूत कर ले, उस कर्म को मोहन कहते हैं। मोहन तीन प्रकार के होते हैं– राज मोहन, समूह अथवा सभा-मोहन और स्त्री-पुरुष मोहन। राज-मोहन में राजा, उच्चाधिकारी आदि को, सभा-मोहन में लोगों के एकत्र समूह को तथा स्त्री-पुरुष मोहन में किसी युवती अथवा महिला तथा पुरुष को अपने प्रति मोहित कर लिया जाता है।

उच्चाटन : जिस कर्म को करने से शत्रु रोगी हो जाता है, वह स्थान और पद से हटने का प्रयास करने लगता है उसे उच्चाटन कहते हैं। इस कर्म के प्रभाव से

साध्य व्यक्ति का मन अस्थिर हो जाता है; उसका क्रिया-कलाप निरुत्साही और उल्लास से हीन हो जाता है।

वश्याकर्षण : जिस प्रयोग को करने से प्राणी साधक की ओर स्वतः ही खिंचा चला आये; शत्रु का विपरीत मन भी साधक के अनुकूल हो जाये; तथा निर्जीव पदार्थ भी साधक के पास स्वयं चला आये, वह क्रिया 'वश्याकर्षण' कहलाती है।

जृम्भण : जिस कर्म के द्वारा साधक के शत्रु उससे भयभीत होने लगें और कांपने लगें उसे 'जृम्भण' कहते हैं।

विद्वेषण : जिस प्रयोग को करने से घनिष्ट मित्रों, देश, परिवार, जाति अथवा समाज में आपस में फूट और कलह होने लगे, उसे 'विद्वेषण' कहते हैं।

मारण : जिस प्रयोग के द्वारा किसी आततायी अन्यायी के प्राणों का हरण कर लें, उसे मारण-प्रयोग कहते हैं।

शान्तिकरण : जिस प्रयोग के द्वारा महामारी, शत्रुभय, राजभय, परचक्र का छेदन, रोग-नाश तथा संकटों का शमन हो जाये, उसे शान्तिकरण कहते हैं।

पौष्टिक : जिस कर्म के करने से देव-दर्शन, सुख-शान्ति तथा ऐश्वर्य में वृद्धि हो, उसे पौष्टिक कर्म कहते हैं। इस कर्म के द्वारा शुभता में वृद्धि तथा समस्त कामनाओं की सिद्धि होती है।

सान्तानिक : जिस प्रयोग को करने से पुत्र-हीना को पुत्र, बन्ध्या को सन्तान प्राप्ति तथा मृतवत्सा को दीर्घायु सन्तान की प्राप्ति हो उसे सान्तानिक प्रयोग कहा जाता है।

इन साधनों में मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, जृम्भण तथा मारण निकृष्ट तथा तामसी प्रयोग माने जाते हैं, अतः इन कर्मों को निषिद्ध किया गया है। एक उत्तम साधक को ऐसे प्रयोग सम्पन्न नहीं करने चाहिए अन्यथा उसकी शुभता का ह्रास होता है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जो साधक इन काम्य कर्मों का प्रयोग करता है, मन्त्र उसका शत्रु बन जाता है। इसलिए आवश्यक है कि विधिवत् न्यास एवं कवच आदि करने के बाद ही काम्य कर्मों का अनुष्ठान साधक को करना चाहिए। सदैव स्मरण रखे कि निष्काम भाव से जो व्यक्ति इष्ट का चिन्तन मनन और मन्त्र-जप करता है, उसे समस्त सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जाती हैं, जबकि जो सकाम भाव से साधना करता है, उस केवल कामना-सिद्धि की ही प्राप्ति होती है। इसलिए साधक को सदैव काम्य-कर्मों से बचना चाहिए।

षट्कर्म-विधान

योगेश्वरानंद एवं सुमित गिरधरवाल
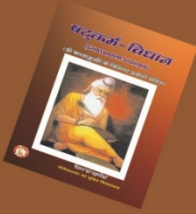
'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र' के द्वारा षट्कर्मों का सम्पादन करने की रुचि प्रायः सभी धर्मों में, सम्प्रदायों में दृष्टिगत होती है। कहीं-कहीं छः कर्मों के कुछ अधिक विभाग भी कर दिये गये हैं। परंतु मुख्यतः छः कर्म ही अधिक देखने में आते हैं। ये षट्कर्म—शान्ति, वशीकरण (मोहन व आकर्षण), स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण एवं मारण के नाम से ज्ञात होते हैं। कल्याणकारी, मंगल प्रदायक, शरीर व मन के रोगों की शान्ति, क्लेशों की शान्ति, ग्रह-बाधाओं के कुप्रभावों की शान्ति, ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति, दरिद्रता-निवारण आदि का कार्य 'शान्ति-कर्म' के अंतर्गत आता है। किसी को उद्देश्यपूर्वक मोहित कर लेना 'मोहन'; किसी को अपने अनुकूल बनाकर कार्य करा लेना 'आकर्षण' तथा किसी को कैसा भी शुभ-अशुभ कार्य करा लेने हेतु वशीभूत कर लेना 'वशीकरण' कर्म कहलाता है। किसी की वृत्तियों का निरोध कर देना, सजीव अथवा निर्जीव को जहां का तहां रोक देना आदि कर्मों को "स्तम्भन-कर्म" कहा जाता है। स्थान से नीचे गिरा देना, किसी के मन में शंका उत्पन्न कर भयभीत कर देना, भगा देना या स्थानांतरित कर देना 'उच्चाटन' कर्म कहलाता है। इस कर्म से प्रभावित साध्य व्यक्ति मारा-मारा फिरता है तथा उसका मस्तिष्क अस्थिर हो जाता है। मित्रों में परस्पर विरोध उत्पन्न कर उनके मध्य द्वन्द्वकरा देना, क्लेश उत्पन्न कर परस्पर शत्रु बना देना 'विद्वेषण' कर्म के अंतर्गत आता है। जबकि किसी जीव के प्राण का हरण कर उसकी जीवन-लीला समाप्त कर देने वाला कर्म— 'मारण' कर्म कहलाता है।

(इसी ग्रन्थ से)

आस्था प्रकाशन मन्दिर

बागपत

Mob. 09410030994, 9540674788

Email. : asthaprakashanmandir@gmail.com

www.asthaprakashan.com

ISBN : 978-93-82171-66-9

It is a preview of the book shatkarm vidhan. If you want to buy this book please deposit Rs 280+100 (courier)= Rs 380/= in below a/c –

Sumit Girdharwal
Axis Bank
912020029471298 (Saving A/C)
IFSC Code – UTIB0001094
And send the receipt to our email sumitgirdharwal@yahoo.com

Our other books –

1. Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi
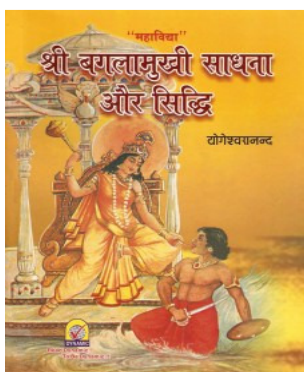
2. Mantra Sadhana

3. Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana Sri Yantra Pooja)